श्री पंचपरमेष्ठी दर्शन

णमो अरिहंताणं
अर्हंतों को नमस्कार

णमो सिद्धाणं
सिद्धों को नमस्कार

णमो आयरियाणं
आचार्यों को नमस्कार

णमो उवज्झायाणं
उपाध्यायों को नमस्कार

णमो लोएसव्वसाहूणं
लोक में सर्वसाधुओं को नमस्कार

पंचपरमेष्ठी नमस्कार

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गुणी।
मंगलं कुन्द कुन्दाद्यो जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्॥
पंच परम गुरु को नमूं सरस्वती शीश नवाय।
गुरु गौतम प्रणमूं सदा, दिजे ज्ञान बताय॥
चारों गति को जीव सूं, बैर भाव मिट जाय।
क्षमा करो सब जीव पर इण बिरियां में आय॥
नमूँ अक्षर पैंतीस को, बहत्तर लागूं पांय।
'कृत्रिम-अकृत्रिम जिन भवन, बन्दूँ सब जिनराय॥
अरहंत छियालीस, सिद्ध आठा, सुर छत्तीसा।
उपाध्याय पच्चीसा, अठबीसा सर्वसाधुजी नमः॥